Vol.11 May'18 No.10
Annual Subscription : Rs.100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

आकाश अनन्त है

–महात्मा चैतन्य मुनि

अनन्त हैं, उत्थान के मार्ग।
पतन के मार्ग भी अनन्त हैं।
अनन्त हैं मुक्ति की राहें
अनन्त हैं बन्धन की बाहें।

प्रकृति अनन्त है, पुरुष अनन्त है
पुरुष विशेष भी अनन्त है।
अनन्त हैं पाँच तत्त्वों के स्वरूप
समुद्र अनन्त, नदियाँ अनन्त,
ग्रह–उपग्रह अनन्त है,
आकाश अनन्त है।

फूल अनन्त, काँटें अनन्त
कर्म अनन्त, जन्म अनन्त
सुख अनन्त, दुःख अनन्त,
अनन्त दिशाएँ अनन्त हैं।

अनन्त हैं वासनाएँ,
अनन्त है साधनाएँ
एषणाएँ अनन्त, वर्जनाएँ अनन्त
विनाश अनन्त, विकास अनन्त,
वृत्तियाँ अनन्त, स्मृतियाँ अनन्त हैं।
इसी अनन्त में हैं,
अनन्त की खोज

अनन्त है प्रकट ब्रह्म
अप्रकट ब्रह्म भी अनन्त है।

अनन्त का अन्त पाना–बेमानी है।
अनन्त में स्वयं की स्थापना
स्वयं में अनन्त की प्रतिष्ठा
अनन्त की पहचान,
अनन्त की स्मृति अपेक्षित है....

अनन्त में जन्म,
अनन्त में मरण
अनन्त में अनन्त का
समर्पण–मात्र सार्थक है,
शेष सब अकारथ है निरर्थक।

महर्षि दयानन्द धाम, महादे
सुन्दर नगर, (जि. मण्डी) हि.प्र

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE Following DONATIONS:-
1. Sh. P.K. Subnani, C-2A/186, Janakpuri N.D.-110058 ₹ 500/-
2. Sh. Yashpal Kaila, B3B/28C, Janakpuri N.D.-110058 ₹ 500/-
Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Sh. Shiv Kumar Madan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan May'18 Vol. 11 No.10
बैशाख-ज्येष्ठ 2075 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. आकाश आनन्त है
–महात्मा चैतन्य मुनि 2
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 8
–डॉ. भारत भूषण
4. 'श्रीराम' ने जीवन पर्यन्त मर्यादा की रक्षा की 9
–श्री सुधांशु जी (महाराज)
5. वेदों में इन्द्र-वृत्र युद्ध और यास्क मुनि 13
–डॉ. महावीर मीमांसक, वेदमार्तण्ड
6. प्राचीन भारत में विमान विद्या का विकास 21
–पं. दीनानाथ शास्त्री
7. वैदिक गणित के अध्ययन के प्रति पश्चिमी देशों में रुझान 25
–राजेश बरनवाल
8. शहीद-ए-आज़म 30
–विवेक शुक्ला
9. मेरे पिताजी (एक मार्मिक संस्मरण)32
–इन्द्र विद्यावाचस्पति
9. How To Be Vishwa Guru 34
-Bhanu Dhamija

संपादकीय

विभाजन की ओर बढ़ते कदम

–भारत भूषण विद्यालंकार

आजकल कर्नाटक का लिंगायत समुदाय चर्चा का विषय है। 2019 के लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए काँग्रेस की सिद्धारमैया सरकार ने लिंगायत और वीरशैव समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा देने की माँग को स्वीकार कर लिया है। इससे पूर्व बौद्धों, जैनियों और सिखों को अलग धार्मिक अल्पसंख्यक स्वीकार किया जा चुका है। इससे प्रश्न उठने लगा है कि हिन्दू धर्म के विभिन्न संप्रदायों को अलग धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा देने से क्या हिन्दू धर्म के टूटने का संकेत मिलता है? वस्तुतः यह माँग वोटबैंक की राजनीति से प्रेरित है।

बारहवीं शताब्दी में समाज सुधारक संत वसवन्ना (वसवेश्वर) के हिन्दू धर्म में जाति व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों और भेदभाव के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। उन्होंने वेदों में कथित बातों और मूर्तिपूजा का विरोध किया। वसवन्ना स्वयं ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे परन्तु उन्होंने जाति और संस्कार आधारित हिन्दू धर्म को अस्वीकार किया तथा जन्म के बजाय कर्म पर आधारित व्यवस्था को उचित ठहराया। बसवन्ना के अनुयायियों को लिंगायत और वीरशैव नाम दिया गया। लिंगायत मूर्तिपूजा का विरोध करते हैं। ये मृतकों को जलाने के बजाय दफनाते हैं और श्राद्ध नियमों का पालन नहीं करते। इनका पुनर्जन्म में भी विश्वास नहीं है। यह शिव की आराधना करते हैं और अपने शरीर पर इष्टलिंग धारण करते हैं। इष्टलिंग गोलाकार होता है जिसे धागे में पिरोकर पहना जाता है। इसे वे चेतना का प्रतीक मानते हैं। इनकी कुछ बातें अवश्य मनुस्मृति से

मेल खाती हैं।
कुछ लोगों के मत में लिंगायत और वीर शैव एक ही हैं। परन्तु लिंगायत मत वाले इससे सहमत नहीं हैं। वस्तुतः वीर शैव समुदाय का अस्तित्व समाज सुधारक बसवन्ना से पहले का है। लिंगायत मत के विपरीत वीर शैव भगवान शिव की पूजा करते हैं। ये स्वयं को ऊँची जाति का मानते हैं और वेदोक्त बातों का सम्मान करते हैं। इस दृष्टि से वे लिंगायतों से भिन्न हैं। वीर शैव शंकराचार्य की वीर पीठों की तरह पाँच पीठों के अनुयायी हैं। इनके यहाँ मंदिर और पुजारी की व्यवस्था है। विवाह आदि सामाजिक रीति-रिवाजों में ये लिंगायतों से भिन्न हैं। वैष्णवों के समान शैव वैदिक सनातन धर्म का बड़ा पंथ है।
यहाँ प्रश्न उठता है कि हिन्दू धर्म के विभिन्न संप्रदायों को धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा देने से अल्प संख्यकवाद को बढ़ावा मिलता है जो हिन्दू धर्म के लिए खतरे की घंटी है। क्योंकि जब वे स्वयं ही अपने को हिन्दू नहीं कहेंगे तो फिर अलगाव का भाव पैदा होता है जो उन्हें हिंदुओं से पृथक् करता है। हिन्दूधर्म में अलग-अलग संप्रदायों की अपनी अलग पहचान रही है परन्तु उनका मूल दर्शन एक ही है। वह हिंदुत्व का हिस्सा है। लिंगायत जिन नियमों को मानते हैं वे मनुस्मृति के ही नियम प्रतीत होते हैं तो वे हिंदूधर्म से अलग कैसे कहे जा सकते हैं?
इस विषय में हिंदूधर्म के विचारक गोविन्दाचार्य के अनुसार हिंदूधर्म को कोई खतरा नहीं क्योंकि धर्म शाश्वत है। यहाँ वैदिक-अवैदिक, आस्तित्व-नास्तिक सभी दर्शन हैं इन्हीं में चार्वाक वाममार्गी भी हैं। लिंगायतों और वीर शैवों में भी विभेद हैं परन्तु पाँच बातें ऐसी हैं जो हिन्दूधर्म को बनाती हैं, उसका सृष्टि के लिए महत्त्व है इसलिए वह खतरे में हो ही

नहीं सकता। हिंदूधर्म की पाँच बातें हैं। किसी भी विधि से किसी भी देवी-देवता, निर्गुण-सगुण की पूजा-उपासना की जाए वह एक ही परमात्मा की आराधना है। कोई छोटा-बड़ा नहीं, सब परमात्मा के रूप हैं। मनुष्य प्रकृति का विजेता नहीं, प्रकृति का अंश है। यही धर्म है जो खतरे में नहीं हो सकता। भारत में उपजे सभी संप्रदाय व्यापक हिन्दू छतरी का ही हिस्सा हैं। किसी को अल्पसंख्यक दर्जा मिल भी जाए तब भी हिन्दू तो हिंदू ही रहेगा। धार्मिक, दार्शनिक दृष्टि से समानता के नाते वह हिन्दू ही है। सबको जोड़ने वाला एक तत्त्व है दर्शन। ये मत शिव की आराधना को केंद्र में रखकर विकसित हुए हैं परन्तु धीरे-धीरे इन्होंने हिंदूधर्म से अलग कई विशेषताएँ अपना लीं। इसलिए इनके मत वालों ने इसे एक स्वतंत्र धर्म मानने पर जोर दिया। यह किसे मालूम था कि 21वीं शताब्दी में यह मत राजनीतिक क्षेत्र में चर्चा का विषय बनेगा? आज इस पर बहस हो रही है कि लिंगायतों और वीर शैवों में प्रचलित अलग रीति-रिवाज क्या इन्हें हिंदूधर्म से अलग करते हैं? और क्या यह तय करने का अधिकार राज्य को है? इसके अतिरिक्त एक और बात यह है कि भारतीय संविधान यह निर्देश करता है कि 'धर्म के मूलभूत विषयों में राज्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता। लिंगायत समुदाय को अलग धर्म का दर्जा देने या न देने के मामले में इन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

यहाँ यह भी विचारणीय है कि धार्मिक मामलों में राज्य इतनी रुचि क्यों ले रहा है? क्या यह राजनैतिक मामला है? इस पर भी विचार करना होगा कि संविधान और सुप्रीमकोर्ट धर्म और राजनीति के संबंध में क्या कहते हैं? भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 अंतरात्मा की स्वतंत्रता की बात करता है अर्थात् व्यक्ति अपनी इच्छा से कोई भी धर्म माने या न माने

यह पूरी तरह उसका निजी मामला है। संविधान का अभिप्राय यह है कि धर्म का संबंध व्यक्तिगत जीवन से रहेगा, पर राज्य का कोई धर्म नहीं होगा। ऐसे ही एक मामले में सुप्रीमकोर्ट ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 123 की व्याख्या करते हुए निर्णय दिया कि किसी के धर्म, जाति, नस्ल, भाषा या समुदाय को चुनाव में आधार बनाना एक भ्रष्ट आचरण माना जाएगा। इससे स्पष्ट है कि राजनीति में धर्म का उपयोग नहीं होना चाहिए। लिंगायतों को अलग धर्म का दर्जा देने के लिए सामाजिक स्वीकार्यता को प्राथमिक आधार बनाना होगा।

इस मामले में एक बात सच है कि अपने आदर्श स्वरूप में हिन्दूधर्म ने जितने परस्पर विरोधी लक्षणों को अपने अंदर समेट रखा है उस हिसाब से लिंगायत या वीर शैव भी हिंदूधर्म का ही हिस्सा संगत सर्वसम्मत एक धार्मिक हैं। अतः लिंगायत को पृथक् धर्म मानने का कोई युक्तिसंगत कारण दिखाई नहीं देता।

यदि हिन्दूधर्म को विघटन से बचाना है और विभिन्न मतों के लिए एक धार्मिक व्यवस्था नियत करनी है तो एक सर्वसम्मत धार्मिक पुस्तक वेद, एक ही पूजा-पद्धति-यज्ञ-हवन और एक ध्वज ओ३म् पर सब सहमत हों। अन्यथा जाति पर आधारित भेदभाव और आपसी फूट से राष्ट्र दुर्बल और हिन्दूधर्म का पतन होगा।

संपादक

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-124)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

आत्माओं की अनन्तता की पुष्टि में प्रकारान्तर से सूत्रकार अगले सूत्र में कहते हैं; सूत्र है-

इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः ।।124।।

अर्थ-(इदानीम् इव) इस समय की तरह (सर्वत्र) सब कालों में (अत्यंत उच्छेदः) पूर्ण रूप से उच्छेद (नाश) (न) नहीं हो सकता।

भावार्थ- इस समय की तरह किसी भी काल में संसार का पूर्णरूप से उच्छेद (नाश) नहीं हो सकता क्योंकि सांख्य के निश्चित प्रमाणों के आधार पर यह कहा गया है कि सत् से असत् और असत् से सत् नहीं होता। जो सत् है वह सत् ही रहेगा और असत् है वह असत् ही रहेगा। संसार आज तक अनादिकाल से वर्तमान है, उसका सत् होना निश्चित है तब उसके अत्यन्त उच्छेद (पूर्णरूप से नाश) की कल्पना नहीं की जा सकती। संसार का यह प्रवाह निरन्तर चलने वाला है, इसके विनाश की संभावना नहीं है। ।।124।।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

चन्दन को ज्यों-ज्यों घिसेंगे, त्यों-त्यों मधुर सुगंध प्रदान करेगा। ईख (गन्ने) को ज्यों-ज्यों पेलेंगे, त्यों-त्यों वह अधिक मीठा रस देगा। सोने को ज्यों-ज्यों तपायेंगे, त्यों-त्यों वह और अधिक चमकता जायेगा। ठीक ऐसे ही जो महान आत्माएँ हैं उनको कोई कितना ही अपमानित करे, पीड़ा दे, बाधा पहुँचाए, वे अपने सत्य, न्याय, परोपकार, प्रसन्नता, नम्रता एवं प्रेम युक्त स्वभाव को कभी भी नहीं छोड़ते हैं, चाहे प्राण भी क्यों न चले जावें

'श्रीराम' ने जीवन पर्यन्त मर्यादा की रक्षा की

–श्री सुधांशु जी (महाराज)

'श्रीराम' जीव लोक के रक्षक, धर्म का रक्षण करने वाले वेद, वेदांगों के तत्त्वों को जानने वाले, धनुर्वेद के परम ज्ञाता थे। उनका स्वभाव मधुर, सज्जनता से भरा, प्रसन्नता से सजा हुआ था। सज्जनों के लिए राम सुलभ थे। वाल्मीकि जी ने रामायण में यह भी कहा – श्रीराम आनंद को बढ़ाने वाले एक नहीं सभी गुणों की खान हैं। वे गम्भीरता में समुद्र जैसे और धैर्य में हिमालय पर्वत के सदृश थे।

मर्यादा पुरुषोत्तम 'श्रीराम' का नाम भारत के उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम, सभी स्थानों में श्रद्धा के साथ लिया जाता है। हिमालय से रामेश्वरम, कन्याकुमारी, किसी भी स्थान पर जाएँ राम गाथा सर्वत्र प्रचलित है। शिक्षित, अशिक्षित, ग्राम, शहर सब जगह राम कथा की धूम है। थाईलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, जावा आदि में भारत से अधिक श्रीराम के प्रति श्रद्धा भावना है। मैक्सिको में राम-सीता के नाम पर उत्सव मनाया जाता है। मिस्त्र के राजाओं के नाम राम के नाम पर रखे जाते थे। मारीशस में राम नाम की भारी गूँज है। वहाँ जन मानस में राम का नाम सर्वोपरि है। इतिहास में, काव्य में, भक्ति में कोई नाम इतना प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय आज तक नहीं हुआ।

'श्रीराम' मनुष्यों के आदर्श के चरमोत्कर्ष थे। आदर्श राजा, आदर्श भाई, आदर्श स्वामी, आदर्श शिष्य। मर्यादाओं के पालक, सच्चा आदर्श श्रीराम ने ही आचरित किया। श्रीराम का कुल रघुकुल कहलाता है। मनु के कारण हम मानव कहलाते हैं। उसी आदि मनु की सात संतानें थीं। ऐसा भी कहा जाता है उनके एक-एक पुत्र ने एक-एक मर्यादा का

पालन किया। वेदों में सप्त मर्यादा कहकर सात मर्यादाओं का उल्लेख किया गया है परन्तु उन सभी मर्यादाओं का पालन राम चरित्र में दिखाई देता है।

मनु के सातों पुत्रों में एक शाखा में भगीरथ, अंशुमान, दिलीप, रघु आदि हुए और दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि। वैवस्वत मनु के पश्चात् सूर्यवंश की 39 पीढ़ियाँ बीत जाने पर राम का अयोध्या में जन्म होता है। राम के गुणों का वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि ने लिखा–

श्रीराम जीव लोक की रक्षा, धर्म का रक्षण करने वाले वेद, वेदांगों के तत्त्वों को जानने वाले, धनुर्वेद के परम ज्ञाता थे। उनका स्वभाव मधुर, सज्जनता से भरा, प्रसन्नता से सजा हुआ था। नदियाँ जैसे समुद्र की ओर दौड़ती हैं। उसी तरह सज्जनों के लिए राम सुलभ थे। वाल्मीकि जी ने रामायण में यह भी कहा–श्रीराम आनंद को बढ़ाने वाले एक नहीं सभी गुणों की खान हैं। वे गम्भीरता में समुद्र जैसे हैं और धैर्य में हिमालय पर्वत के सदृश हैं।

किसी प्रकार की विपरीत स्थिति आने पर उन्होंने मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। पिता भी मर्यादा भूल गये तो श्रीराम मर्यादा पुरुष बनकर उन्हें मर्यादा और धर्मपालन करने के लिए प्रेरित करते रहे। श्रीराम वनवास के लिए जाने लगे, उसी समय राजा दशरथ की मूर्च्छा टूटी और होश में आते ही उन्होंने श्री राम से कहा हे राम! मैं कैकेयी को वचन देकर बँध गया हूँ। आप मुझे बन्दी बनाकर बन्दीघर में डाल दो और स्वयं राजा बन जाओ। पिता ने जैसे ही मर्यादाहीनता का आदेश दिया श्रीराम मुस्कुरा दिये और बोले–हे पिताजी! आप इस धरती के और इस अयोध्या के हजारों वर्ष तक राजा बनकर रहें यह मेरी अभिलाषा है मुझे वन का आधिपत्य

मिल चुका है इसलिए मुझे राज्य की कामना नहीं है। इसी प्रकार माँ कौशल्या भी आवेश और दुःख के भाव में बहते हुए श्रीराम को वन जाने से रोकने के लिए कहने लगीं। हे राम! आप अपने पिता के आदेश का पालन करने के लिए वन जा रहे हैं। जितना अधिकार आपके ऊपर पिता का है उतना ही मेरा भी आप पर है। यदि पिता वन जाने के लिए कहते हैं तो मैं वन न जाने के लिए आपको आदेश देती हूँ। माँ की आदेशमयी वाणी सुनकर श्रीराम शांत भाव में बोले हे मातुः! रघुकुल में पति के आदेश का उल्लंघन करके मर्यादा तोड़ने का अपराध न करें। मेरे लिए जो निश्चित हो चुका है कृपया उसे हो जाने दीजिए। माँ कौशल्या का ममता से भरा हृदय द्रवित होकर रोने लगा और रोते हुए कहा–हे पुत्र! जैसे गोमाता अपने बछड़े के पीछे–पीछे चलती है वैसे मैं भी अपने राम के पीछे–पीछे वन जाऊँगी। कौशल्या माँ से विनम्र होकर श्रीराम बोले–माताजी जब तक अयोध्या के राजा मेरे पिता जीवित हैं तब तक आप उनकी सेवा करो यही प्राचीन धर्म है। श्रीराम को अपनी चिन्ता नहीं उन्हें तो 14 वर्षों के वनवास के समय अयोध्या में पिताजी को कोई कष्ट न हो इस बात का अधिक ध्यान है। माता मेरे वनवास के कारण रूष्ट होकर पिताजी की सेवा न छोड़ दें इस बात का अधिक ध्यान है। अतः माता को भी धर्म की मर्यादा की बात याद कराकर पिताजी की सेवा के लिए प्रेरित करते हैं।

एक बार ऐसा भी समय आया जब लक्ष्मण मर्यादा का उल्लंघन कर भरत पर तीर चलाने को उद्यत होते हैं। उस समय भी राम मर्यादा को याद कराते हुए कहते हैं– हे लक्ष्मण! धर्म, अर्थ, काम और इस राज्य को भी मैं तुम

भाइयों के सुख के लिए छोड़ सकता हूँ। मेरी दृष्टि आप सबको सुख पहुँचाने की है न कि दुःख पहुँचाने की। सागर पर्यन्त 'पृथ्वी' प्राप्त कर लेना मेरे लिए कोई कठिन कार्य नहीं है किन्तु अधर्म से तो मैं इन्द्र पद भी प्राप्त नहीं करना चाहता। प्रिय लक्ष्मण प्रेम भाव से, मेरे, तेरे वियोग से दुःखी होकर भरत हमें मिलने आ रहा है और किसी विचार से नहीं। मित्र को भी मर्यादा और कर्त्तव्य की याद दिलाई। मित्र सुग्रीव पर कृपा कर उसे उसका राज्य वापस दिला दिया। मित्र सुग्रीव ने अपने मित्र राम को वचन दिया कि सीता जी को खोजकर उन्हें वापस लाने में मैं आपका पूर्ण सहयोग करूँगा। परन्तु अपना राज्य और पत्नी को प्राप्त करते ही सुग्रीव, वर्षा ऋतु का कारण बताते हुए अपने महल में सुख की नींद सोने लगा। वर्षा ऋतु समाप्त होने को आ गई परन्तु सुग्रीव नहीं आया, मर्यादा भूले मित्र को चेतावनी और कर्त्तव्य याद कराने लक्ष्मण को भेजा। लक्ष्मण से कहा–जाओ, सुग्रीव को कहना कि जिस द्वार से हमने बाली को यमपुरी भेजा है वह द्वार हमने अभी बंद नहीं किया, यदि तुम अपने स्वार्थ विलास में डूब गये हो और अपने वचन का पालन और कर्त्तव्य पालन नहीं कर रहे हो तो हमने जो कहा हम उसका अवश्य पालन करेंगे। चेतावनी से सुग्रीव तुरंत महल छोड़ ठीक मार्ग पर आ गया। मर्यादा से डिगाने में अपने मातृ–पितृ वाक्यों को सुनकर भी धर्म और मर्यादा के मार्ग से विचलित नहीं हुए।

निश्चित ही राम मानवीय मूल्यों के सर्वोच्च आदर्श हैं। श्रीराम का पावन चरित्र हमारे जीवन में नैतिकता, धर्म और कर्त्तव्य पालन का संदेश देता रहेगा। रामनवमी पर श्रीराम के चरित्र से सीख लेने का हमें संकल्प लेना चाहिए।

वेदों में इन्द्र–वृत्र युद्ध और यास्क मुनि

–डॉ. महावीर मीमांसक, वेदमार्तण्ड

आचार्य यास्क का निरुक्त वैदिक युग की एक क्रान्तिकारी रचना है। यह ग्रन्थ उस समय का प्रतिबिम्बन है जब वेद के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्त धारणायें प्रचलित हो चुकी थीं, विशेषतः वैदिक मन्त्रों के अर्थों के सम्बन्ध में। वैदिक मन्त्रों के मनमाने अर्थ भिन्न–भिन्न प्रकार से करने के 11 सम्प्रदायों का उल्लेख यास्क के निरुक्त में मिलता है जो उस समय तक प्रचलित हो चुके थे, जिनमें ऐतिहासिक सम्प्रदाय भी एक था। इन सम्प्रदायों का उल्लेख यास्क ने इति याज्ञिकाः, इति पौराणिकाः, इति वैयाकरणाः इति ऐतिहासिकाः इत्यन्ये, इत्यपरे इत्यादि शब्दों से किया है और इन सब के विपरीत/अतिरिक्त अपनी पद्धति को प्रतिपादित करने के लिए यास्क को अपने पूर्व पक्षियों की मान्यताओं का विस्तार से उल्लेख करके उनका तर्क और प्रमाणपूर्वक खण्डन करना पड़ा। वेद के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उन्हें निरुक्त में स्थान–स्थान पर वेद–भाष्य–पद्धति में उनका भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अर्थ विज्ञान का अद्‌भुत सिद्धान्त 'धातुज सिद्धान्त' था जो शब्दों का निर्वचन वैदिक धातुओं से व्युत्पन्न करके उनका अर्थ निर्धारण थोड़ा रूढ़ि के आधार पर ढूंढ़ता था जिसके लिये उन्हें कहना पड़ा, **"अर्थ नित्यः परीक्षेत, न व्याकरणमाद्रियेत, विषयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति।"**

यास्काचार्य वेद की भ्रान्तिपूर्ण व्याख्या करने वाले सम्प्रदायों का उल्लेख बड़ी ईमानदारी से, स्पष्ट रूप में, बड़े विस्तार से करते हैं जिनमें एक ऐतिहासिक सम्प्रदाय भी है जो वेद में पूर्वकालिक इतिहास की घटनाओं की व्याख्या वैदिक मन्त्रों के आधार पर करता है। यद्यपि यास्क ने ऐसी ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख अनेक मन्त्रों की यथा प्रसंग व्याख्या के

अवसर पर किया जिसका स्पष्ट खण्डन भी यास्क ने उन वैदिक मन्त्रों की व्याख्या के आधार पर किया है, हम यहाँ केवल एक ही प्रसंग को प्रस्तुत करते हैं और वह है वेद में इन्द्र-वृत्र-युद्ध।

इन्द्र-वृत्र-युद्ध का विशद और स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 32वें सूक्त में मिलता है जिसमें 25 मन्त्र हैं। सूक्त के प्रथम मन्त्र का वर्णन इन शब्दों से प्रारम्भ होता है **"इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्रो।"** "अब हम इन्द्र के प्रमुख बल-पराक्रम के कार्यों का वर्णन करते हैं।" इन्द्र के सर्वप्रथम बल, पराक्रम के कार्य को बतलाता हुआ वेद मंत्र का अगला चरण कहता है **"अहन्नहिम्"**। इन्द्र सर्वप्रथम अहि (मेघ) को मारता है। इन्द्र क्या है, अहि और वृत्र क्या है? इत्यादि का स्पष्टीकरण हम आगे सप्रमाण करेंगे। इस सन्दर्भ में इसी सूक्त के 10वें और 11वें मन्त्र को हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं विचिरन्त्यापो दीर्घ तक आशयदिन्द्रशत्रुः।।

(ऋक्.1.31.10)

यास्काचार्य अपने अद्भुत ग्रन्थ निरुक्त में सीधे यह प्रश्न उठाते हैं-तत् को वृत्रः? (निरु.2.5)। यहाँ मन्त्र में पठित वृत्र कौन हैं? बड़ा स्पष्ट उत्तर देते हैं, **"मेघः इति नैरुक्ताः त्वाष्ट्रोऽसुरः इत्यैतिहासिकाः।"** नैरुक्तों के अनुसार वृत्र मेघ है, और इतिहासिकों के अनुसार त्वष्टा का पुत्र असुर वृत्र है। यास्क ने यहाँ दोनों पक्ष बड़े ईमानदारी से स्पष्ट रख दिये हैं। वेद में इतिहास मानने वाला सम्प्रदाय यास्क के 7समय तक प्रखर रूप में उभर चुका था और वेद के मन्त्रों की व्याख्या ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बड़ा मुखर हो कर करता था, यह तथ्य यास्क के इस वचन तथा अन्य वचनों से बड़ा स्पष्ट है। किन्तु यास्क भी इनके विरोध में बड़ा प्रबल स्वर खड़ा करते हैं और

वेद के प्रत्येक शब्द की व्याख्या बड़े प्रामाणिक सिद्धान्तों के आधार पर करते हैं। यहाँ यह तथ्य स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि यास्क से बहुत पहले से ही वेद की व्याख्या निर्वचन सिद्धांतों पर करने की पद्धति प्रचलित थी, यास्क कोई प्रथम आविष्कारक नहीं थे, यह बात उनके ग्रन्थ निरुक्त के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है, यही बात यहाँ 'इति नैरुक्ताः' शब्दों से भी स्पष्ट है। अस्तु! यद्यपि शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में इस मन्त्र का विनियोग दर्शपौर्णमास याग के प्रसंग में दर्शेष्टि सौत्रामणि याग में किया गया है, जहाँ इस मन्त्र की याज्ञिक व्याख्या बड़ी प्रतीकात्मक और बड़ी रहस्यमयी लगती है किन्तु याज्ञिक प्रतीकात्मक वह व्याख्या अन्ततः वही है जो यास्क ने वृत्र शब्द का अर्थ मेघ देकर की है। सायणाचार्य ने इसकी व्याख्या शतपथ ब्राह्मण में भी बड़ी भ्रामक की है। अन्यत्र ब्राह्मण ग्रन्थों में भी सामान्य पाठक को ऐसी ही लगती है। इसके लिये पूरी याज्ञिक प्रक्रिया की व्याख्या समझनी होगी जो जैमिनी ने अपने दर्शन पूर्वमीमांसा में की है। हम यहाँ यास्क के आधार पर लिख रहे हैं।

जैसे वृत्र शब्द का अर्थ मेघ देखकर यास्क ने भ्रम निवारण किया वैसे ही देवता और इन्द्र शब्दों का वास्तविक अर्थ क्या है जिनके सम्बन्ध में बहुत बड़ा भ्रम है, वह भी यास्क ने स्पष्ट किया है। देवता का वेद में क्या अभिप्राय है, यास्क ने लिखा है, **"यत्काम ऋषिर्यस्यां देवतायामार्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद् दैवतः स मन्त्रो भवति"** (नि.7/1)। देवता मन्त्र का (अर्थपति) मुख्यार्थ शीर्षक या वर्णनीय विषयवस्तु होता है। ऋषि अपनी कामना के अनुसार मन्त्र का देवता बदल ले, यह व्याख्या करना सर्वथा गलत है। यहाँ ऋषि की आर्थी कामना या भावना सनातन है, वह समय-समय पर बदलती नहीं है।

यदि ऐसा होता तो अभी तक मन्त्रों के देवता कितनी ही बार बदलते-बदलते अनेक हो जाते, किन्तु देवता वही निश्चित हैं क्योंकि मन्त्रों के अर्थ निश्चित हैं। देवता के सम्बन्ध में एक और भ्रान्ति का निवारण यास्क करते हैं कि देवता कोई पुरुषाकार व्यक्ति नहीं हैं। (द. निरु.7.7) **'अपरुषविधानामेव सताम्.... एष चाख्यानसमयः।'**

इन्द्र क्या है, यह भी यास्क ने स्पष्ट किया है। इन्द्र आदि देवता कोई दैत्याकार विशालकाय या पुरुष व्यक्ति विशेष नहीं है जैसे कि मध्यकालीन वेद-भाष्यकारों, पश्चिमी विद्वानों और उनकी अन्धी दासता करने वाले आधुनिक भारतीय विद्वानों ने समझ लिया है। यास्क इस सम्बन्ध में बहुत ही महत्त्वपूर्ण वैदिक विज्ञान के जिन रहस्यों का उद्घाटन करते हैं, आज फिर से प्रखर रूप में उजागर करने की महती आवश्यकता है।

यास्क के अनुसार वेद में तीन ही वर्णनीय विषय-देवता हैं- **1. पृथ्वीस्थानीय अग्नि, 2. अन्तरिक्षस्थानीय वायु या इन्द्र, 3. द्युस्थानीय सूर्य। "तिस्त्र एव देवता इति नैरुक्ताः। अग्निः पृथ्वी स्थानो वायुर्वेंद्रो वान्तरिक्षस्थानः सूर्यो द्युस्थानः।"** (निरु.8.2)। यास्क के इस वचन के अनुसार वेद में समग्र सृष्टि मण्डल का भौतिक विज्ञान वर्णनीय विषय है। समस्त सृष्टि भौतिक विज्ञान की दृष्टि से तीन वर्गों में विभक्त है, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यु। पृथ्वी पर मुख्य भौतिक शक्ति अग्नि का कार्यकलाप है, अन्तरिक्ष, वायु या इन्द्र भौतिक शक्ति के व्यापार और कार्यों का क्षेत्र है और द्युलोक सूर्य की भौतिक शक्तियों का कार्य क्षेत्र है। एतदनुसार इन्द्र अन्तरिक्ष लोक में कार्य व्यापार करने वाली भौतिक या प्राकृतिक शक्ति है।

अन्तरिक्ष में अपना कार्य व्यापार करने वाली 68 भौतिक शक्तियों का वर्णन वेद में किया गया जिनका उल्लेख वैदिक निघण्टु में किया गया है, उनमें प्रथम पाँच का उल्लेख हम

करते हैं, 1. वायु, 2. वरुण, 3. रुद्र, 4. इन्द्र, 5. पर्जन्य। इन सब की परिभाषा यास्क ने अपने निरुक्त में निर्वचन और उसकी व्याख्या द्वारा की है तथा वेद मन्त्रों के उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है कि वे भौतिक शक्तियाँ किस प्रकार की हैं, कैसे अपना कार्य व्यापार अन्तरिक्ष में कराती हैं जिससे इस समस्त सृष्टि की क्रियाओं-प्रक्रियाओं का संचालन होता है। इन सबकी विस्तृत व्याख्या वैदिक उदाहरणों सहित विस्तार में जानने के लिए हमारा लेख देखिए- **"वैदिक वाङ्मये अन्तरिक्षविज्ञानम्"**।

वेद में इन्द्र देवता क्या है और उसका क्या स्वरूप है, यह बात इन्द्र के यास्कीय निर्वचन से स्पष्ट हो जाती है।

वैदिक इन्द्र देवता का निर्वचन निरुक्त में निम्न है- **"इन्द्र इरांदृणातीति वा, इरां ददातीति वा, इरां दारयते इति वा, इन्धे भूतानि इति वा"**। इन्द्र मेघ को विदीर्ण कर बरसने के लिए जल के रूप में परिणत करता है, अथवा बादल को बरसा कर भूमि में अन्नादि के बीज अंकुरित करता है। दुर्गाचार्य ने भी इसकी यही व्याख्या की है **"वर्षक्लेदितम्अंकुरबीजं भिनत्ति तदिन्द्रकर्म"** **'इन्दवे द्रवति'** की व्याख्या दुर्गाचार्य ने यूँ की है, **"इन्दुः सोमः तं पातुमसौ द्रवति, द्रवति गत्यर्थः सोमपानार्थमसौ द्रवति।** अन्तरिक्ष में जो वाष्प के रूप में एकत्रित जलीयांश सोम है, उसको पीने के लिए दौड़ता है अथवा सोम में रमण करता है विचरता है, यह मेघ में स्थित वैद्युत् अग्नि है जो वर्षा से पहले कौंदती है और मेघ को जल के रूप में विदीर्ण करके बरसाने के लिए संघर्ष करती है। यही बात **'इन्धे भूतनि'** भौतिक पदार्थों को यह जलाती है, से स्पष्ट है। इन्द्र का स्वरूप यास्क के निरुक्त में स्पष्ट किया है, **"अथास्य कर्म रसानुप्रदानं, वृत्र वधो, या च का च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत्।'** मेघ को रस (जल) के रूप में परिणत करके वृष्टि प्रदान करना, वृत्र का वध और अन्य जो

भी अन्तरिक्ष में शक्ति सम्पन्न कार्यों की घटनायें होती हैं वे सब इन्द्र के ही कार्य हैं। **'वृत्रवधः'** की व्याख्या दुर्गाचार्य ने **'मेघवधः'** की है। इसे हम आगे स्पष्ट करेंगे। इन्द्र वह भौतिक शक्ति-वैद्युत् अग्नि है जो अन्तरिक्ष में मेघ को विदीर्ण करके जल के रूप में प्रवाहित करती है जो वृष्टि कहलाती है। जिन वेद मन्त्रों या सूक्तों में इस भौतिक शक्ति का या इसके कार्यकलापों का वर्णन है, उनका वर्णनीय विषय इन्द्र है अतः उनका देवता इन्द्र कहलाता है। इन्द्र के कार्यों का वर्णन स्पष्ट करने के लिए हम अपने पूर्व प्रस्तुत मन्त्र पर आते हैं।

उपरोक्त मन्त्र जलवाची 'काष्ठा' वैदिक शब्द के उदाहरण के रूप में यास्क ने निरुक्त में प्रस्तुत करके इसकी व्याख्या बड़ी स्पष्ट की है। **"आपो हि काष्ठा उच्यन्ते, क्रान्त्वास्थिता भवन्तीति"** 'काष्ठा' शब्द के जलवाची इस निर्वचन में यास्क ने मेघ स्थित जल के उदाहरण के रूप में यह मन्त्र प्रस्तुत किया है। 'अतिष्ठिन्तीना' की व्याख्या दुर्गाचार्य ने 'मेघोदरम्' से की है। मेघ में सुरक्षित इधर-उधर अन्तरिक्ष में घूमते हुए पानी को बादलों ने अपने अन्दर गुप्त रखा है। वृत्र अर्थात् मेघ (बादल) पानी के भार से नीचे झुक गया है, लबालब भरा हुआ पानी 'अनिवेशानां' इधर से उधर विचरण कर रहा है। इस प्रकार 'इन्द्र शत्रु' अर्थात् मेघ/बादलों की घनघोर घटा से चारों ओर गहन अन्धकार छा गया है। यह मूसलाधार वर्षा प्रारंभ होने से पहले की स्थिति का वर्णन है। **'दीर्घंतम आशयदिन्द्रशत्रुः"।** ऋ.1/32/10

यहाँ मन्त्र में 'इन्द्र शत्रुः शब्द ध्यातव्य है। यास्क ने इस शब्द की व्याख्या यूँ की है, **'इन्द्रशत्रुरिन्द्रोऽस्य शातयिता वा शमयिता वा।'** इन्द्र वह भौतिक शक्ति है जो मेघ को प्रताड़ित करती है।

यहीं पर यास्क ने प्रश्न उठाया है, **'तत्को वृत्रः?'** उत्तर भी

यहीं दिया है, **'मेघ इति नैरुक्ताः।'** नैरुक्त परम्परा के अनुसार मेघ ही वृत्र है। इन्द्र कैसे इस वृत्र अर्थात् मेघ का शत्रु- **"शातयिता या शमयिता"** कहलाता है, इस उत्सुकता भरी जिज्ञासा और कौतुहल का समाधान यास्क स्वयं करते हैं **"अपां च ज्योतिषाञ्च मिश्रीभावकर्मणा वर्षकर्म जायते, तत्रोपमार्थेन युद्धवर्णा भवन्ति।"** मेघस्थल जल के साथ जब वैद्युत ज्योति-अग्नि का मिश्रण संघर्षण होता है तो वृत्र मेघ का जल संघात रूप विदीर्ण होता है और मेघ जल के रूप में द्रवित होकर वृष्टि के रूप में परिणत हो जाता है, वैद्युत-अग्नि का मेघ के साथ यही मिश्रण संघर्ष के रूप में चलता है और अन्तरिक्ष में होने वाली इसी प्राकृत घटना को इन्द्र-वृत्र युद्ध उपमालंकार से कहा जाता है। वेद भी देव का अजर अमर काव्य है, **"पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति"**। यहाँ इन्द्र वैद्युत-ज्योति या वैद्युत् अग्नि है और वृत्र साक्षात् मेघ है। वैद्युत-ऊर्जा मेघ को जल के रूप में द्रवित करने में पूरा जोर लगाती हैं और जब उसकी शक्ति मेघ पर हावी हो जाती है तो मेघ द्रवित होकर बरसने लगता है, यही वृत्र का वध है अर्थात् मेघ का विदीर्ण होकर जल के रूप में द्रवित होना। इसी रोचक घटना को यास्क ने वर्णित करते हुए कहा है- **"-विवृद्ध्या स्रोतांसि निवारयाञ्चकार, तस्मिन् हते प्रसस्यन्दिरे आपः"।**

मेघ जल के रूप में द्रवित होकर बरसने से पहले खूब घनघोर रूप धारण करते हुए बढ़ता है, फैलता है और अन्त में इन्द्र-वैद्युत शक्ति से विदीर्ण होकर बरसने लगता है। इसलिए इन्द्र वृत्र का शातयिता या शमयिता होने के कारण इन्द्रशत्रु कहा गया है जिसका अर्थ बहुब्रीहि समास करने पर वृत्र या मेघ होगा, (इन्द्रः शत्रुः यस्य सः इन्द्रशत्रुः, वृत्र या मेघ) यही अर्थ यहाँ अभिप्रेत है। अन्यथा तत्पुरुष समास मानने पर "इन्द्रस्य शत्रुः' इस विग्रह में वृत्र या मेघ इन्द्र का शातयिता

या शमयिता होने पर वैद्युत-शक्ति का जोर मेघ को जल के रूप में विदीर्ण करके वृष्टि करने में असफल रहेगा, और बादल गर्ज गर्जाकर नौ दो ग्यारह हो जायेंगे। यज्ञ प्रक्रिया अनुष्ठान में इसी दोष और विकृति का वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों के इस वचन से होता है। **"इन्द्रशत्रुर्वधस्व"** जिसमें यजमान स्वर दोष से इसका उच्चारण अन्तोदात्त तत्पुरुष समास करके करता है जो वर्षेष्टि याग-अनुष्ठान की दूषित प्रक्रिया का द्योतक है जिससे अभीष्ट फल अर्थात् वृष्टि से यजमान (जनता) वंचित रह जाता है। वर्धस्व शब्द मेघ के बरसने से पहले उसके घनघोर आप्यायित रूप का द्योतक है जिसे यास्क ने 'विवृद्ध्या' शब्द से कहा है। इस वर्षेष्टि याग के अनुष्ठान की प्रक्रिया का विशद विवेचन और वर्णन पूर्व मीमांसा में किया गया है जिसे आजकल हर कोई किसी भी तरह से कर बैठता है और अभीष्ट फल नहीं मिलता। वेद में उपमा अलंकार के रूप में युद्ध का वर्णन केवल इन्द्र और वृत्र का ही नहीं है अपितु वेद में इन्द्र और अहि के युद्ध का वर्णन भी इसी युद्ध की उपमा के माध्यम से होता है क्योंकि वृत्र की भाँति 'अहि' शब्द भी वेद में मेघ का वाचक है। इसी बात को यास्क फिर स्पष्ट करते हैं- **"अहिवत्तु खलु मन्त्रवर्णाः ब्राह्मणवादाश्च"**। (नि.2.5) उपमा के रूप में इन्द्र-वृत्र युद्ध की भाँति इन्द्र अहि युद्ध भी मन्त्रों में, वेद के शाखा ग्रन्थों में और ब्राह्मण ग्रन्थों मे मिलता है जिसकी यही व्याख्या है। अतः इस सम्बन्ध में कोई भ्रम या संशय न रहे, यह तथ्य यास्क ने और निरुक्त के उत्तरवर्ती स्कन्द स्वामी तथा दुर्गाचार्य आदि व्याख्याकारों ने आज से हजारों वर्ष पहले ही स्पष्ट कर दिया था जिसका पता प्राचीन भारतीयों को अन्तरिक्ष में काम करने वाली इन्द्र आदि भौतिक शक्तियों और वृष्टि विज्ञान की सूक्ष्म बारीकियों से भली भाँति था।

क्रमशः-

प्राचीन भारत में विमान विद्या का विकास

-पं. दीनानाथ शास्त्री

भारतवर्ष की प्रमुख धरोहर, विश्व के पुस्तकालय में आदिम ग्रन्थ तथा अपौरुषेय कृति वेद हैं जिन्हें समस्त सत्य विद्याओं का आदि स्रोत माना जाता है। वेद की कुल 1127 शाखाएँ थीं। बहुत-सी विलुप्त हो गईं, कुछ ही मिलती हैं। वेदों में बीजरूप में विद्यमान विद्याओं में ऋषियों, वैज्ञानिकों ने मंथन करके नये-नये शास्त्रों का निर्माण किया। जहाँ इस धरती पर रहने के लिये उन लोगों ने गाँवों, शहरों तथा सड़कों के निर्माण की कला का अभ्युदय किया, वहीं जल, नभ में गमन करने के लिए साधन निर्माण हेतु शास्त्र बनाये।

मनुष्य के अतिरिक्त संसार के अन्य प्राणियों में भी माता-पिता तो होते हैं किन्तु माँ केवल जन्म देकर नर्स के कार्य तक ही सीमित रहती है। पिता मात्र जनक है। अतः पिता का उसे पता ही नहीं होता। गुरु का उनके लिये प्रश्न ही नहीं। उन्हें अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही स्वाभाविक ज्ञान प्राप्त होता है। यथा-एक मधुमक्खी है। जैसे छत्तों और शहद निर्माण कला उसको जन्म से प्राप्त है। वैसी ही भारत अथवा संसार में कहीं किसी भी काल में पाई जाती है। इन्हें कोई न पढ़ाता है और न छत्ते का डिजाइन बता के देता है। इसके अतिरिक्त शहद और मोम बनाने की अद्भुत कला तो है पर कोई इन्हें रसायन नहीं कहता। उनका यह स्वाभाविक ज्ञान है। इससे भिन्न प्रकार का छत्ता या शहद वे बना भी नहीं सकतीं। क्योंकि उनका ज्ञान मात्र इतना ही है।

ऋषियों (वैज्ञानिकों) ने श्रुति से जाना- 'योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम'।। और आकाश में उड़ते पक्षियों को देखा तो उनके गति साम्य को जान कर विमान शास्त्र की रचना कर डाली। (यथा-सेब के फल को नीचे गिरते देख न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की तथा भाप से ढक्कन उठता देख जेम्सवाट ने स्टीम इन्जन की रचना की) प्राचीन भारत में विरचित विमान विद्या से सम्बन्धित साहित्य आज लुप्तप्राय ही है।

वाल्मीकि रामायण का 'पुष्पक' विमान लोक-प्रसिद्ध है। सीता को लुभाने के लिए रावण कहता है- "पुष्पक नाम सुश्रोणि यद् विमानमनुत्तमम् तत्र सीते या सार्धं विहरस्व यथासुखम्"।। तथा "लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हँसि करिय कृपा सिन्धु तब भाषा।। महाराजा भोज के "समराङ्गण सूत्र धार" ग्रन्थ में विमान के आकाश में उड़ने का उल्लेख है। प्राचीन साहित्य में एक अलभ्य महर्षि भारद्वाज प्राचीन **"यन्त्र सर्वस्व"** ग्रन्थान्तर्गत 'वैमानिक प्रकरण' जो कि 4 अध्यायों, 100 अधिकरणों तथा 50 सूत्रों में रचा था, प्राप्त हुआ है। उसमें प्रारम्भ के 14 सूत्र मिलते हैं किन्तु बीच-बीच में अव्यवस्थित रूप से कुछ और भी सूत्र मिलते हैं। वृत्तिकार बोधानन्द यति के लगभग 3000 श्लोक तथा 23 कापियों में यह ग्रन्थ मिला है जिसकी एक कापी 1918ई. की बड़ौदा राजकीय संस्कृत लाइब्रेरी से प्राप्त हुई है। इस ग्रन्थ का स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक ने सम्पादन तथा हिन्दी में अनुवाद किया है। यह दुर्लभ ग्रन्थ 1959ई. में 'वृहद विमानशास्त्र' के नाम से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ में 97 पुरातन विमान विद्या से संबंधित ग्रन्थों का उल्लेख आया है, तथा वैमानिक प्रकरण में 36 आचार्यों के नाम भी विमान कला विषयक शास्त्र-निर्मातृत्व और मत प्रदर्शन के प्रसङ्ग में आये हैं।

पुरातनकाल के ऋषि-महर्षि सभी अपने विषय को वेद से अनुमोदित या आविष्कृत घोषित करते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने **'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'** नामक ग्रन्थ में वेदों में विमान विद्या के विधायक मन्त्रों का संक्षिप्त परिचय दिया है। महर्षि भारद्वाज ने भी विमान विद्या का आविष्कार वेद से ही माना है तथा 'विमान' शब्द का अर्थ करते हुए लिखा है- **'वेग साम्याद् विमानोण्डजानामिति।'** अर्थात् पक्षियों के वेग साम्य से विमान कहलाता है। लाल आचार्य ने भी इसी प्रकार कहा है। 'विमान चन्द्रिका' के आचार्य नारायण ने लिखा है- **"पृथिव्य-स्वन्तरिक्षेषु** खगवद्वेगतः स्वयम्। यस्समर्थो भवेद् गन्तुं स विमान इति स्मृतः।।" अर्थात् पृथ्वी, जल, आकाश, में पक्षियों के वेग की भाँति स्वयं (यंत्रादि द्वारा) जो गमन करने

में समर्थ हो वह विमान कहा गया है।

महर्षि भारद्वाज के पूर्व अनेक विमान शास्त्र के रचनाकार नारायण, शौनक, गर्ग, वाचस्पति तथा चक्रायणि आदि हुए हैं जिनके ग्रन्थ क्रमशः विमान चन्द्रिका, व्योमयान तन्त्र, यन्त्रकल्प, यानबिन्दु, और खेटयान प्रदीपिका आदि हैं। ये ग्रंथ आज अप्राप्य हैं।

'बृहद्विमान शास्त्र' के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के विमानों के निर्माण का वर्णन किया गया है। विमान के जाति भेद-मान्त्रिक, तान्त्रिक तथा कृतक (यान्त्रिक) किये गये हैं। 'कृतक' के अन्तर्गत शकुन, स्क्म, सुन्दर विमान (शूण्डाल से धुँए के आधार पर चलने वाला जेट विमान) तथा त्रिपुर विमान (स्थल, जल और नभ तीनों में चलने, तैरने और उड़ने वाला विमान) आदि 25 प्रकार के माने गये हैं। विमान की विभिन्न गतियाँ-चालन, कम्पन, ऊर्ध्वगमन, अधोगमन, मण्डल गति, चक्रगति, धूमगति, विचित्र गतियाँ वर्णित की गई हैं। आकाशीय मार्ग रेखापथ, मण्डल, कक्ष्य, शक्ति और केन्द्र पाँच का उल्लेख है। विमान के गति अवरोध के रूप में पाँच 'आकाशीय आवर्ती-रशविक्वातांशु शैल्य घर्षण संज्ञकाः' अर्थात् शक्ति, वात, अंशु (किरणें), शैत्य, घर्षण (ध्वनि आदि) बतलाए हैं। रक्षा विधान तथा यन्त्र विधान के सम्बन्ध में बृहद् वर्णन मिलता है। यथा-शत्रुओं के प्रहारों आदि से बचाने तथा उन पर प्रहार करने का विशद् विवेचन किया गया है। विमान से सुदूर शत्रु विमान पर 4087 तरङ्गें फेंककर नष्ट करने का विधान है।

विमान चालक के लिए 32 रहस्यों (अदृश्यकरण, शब्द प्रसारण, लांघन, रूपाकर्षण आदि) का सविस्तार वर्णन करते हुए इनका ज्ञाता होना आवश्यक बताया है। पायलट आदि के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों का भी निर्देश है। विभिन्न यन्त्रों को भिन्न-भिन्न धातुओं से बनाने तथा उन धातुओं के निर्माण की विधि भी बताई गई है। शत्रु के द्वारा भूमि में छिपाये हुए बमों या भूमि के अंदर की प्राकृतिक सम्पदाओं का ज्ञान, मौसम, ग्रहों आदि का ज्ञान तथा उनके चित्र आदि प्राप्त करने का वर्णन मिलता है। शक्तिशाली लेंस निर्माण की कला भी वर्णित है। **"इसमें वर्णित 'त्रिपुर' विमान वैज्ञानिकों के लिये आज अनुसन्धान**

का विषय है," जिसके विषय में आचार्य नारायण कहते हैं।

पृथिव्याप्वन्तरिक्षेषु स्वाङ्गभेदात् स्वभावतः।।

यस्समर्थो भवेद् गन्तुं तमाहुस्त्रिपुरं बुधाः।।

अर्थात् पृथिवी, जल और अन्तरिक्ष में अपने अङ्गों के भेद से जो चलने में समर्थ हो उसे 'त्रिपुर' कहते हैं। यह पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित विमान था।

पुरातन भारत में विमान इस प्रकार निर्मित थे कि वे आकाश में उड़ते हुए पक्षियों (गृद्ध आदि) से टकराकर नष्ट हो जायें, इस हेतु पर्याप्त रक्षा व्यवस्था थी। अस्तु। हमारे देश का प्राचीन वाङ्मय जहाँ सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहा, वहीं विमान विद्या में भी सर्वोच्च शिखर पर रहा था।

आधुनिक समय में भी भारत विमान के क्षेत्र में बहुत विकास कर रहा है। हमारा कोरवा डिविजन भारत के विमान कला की नूतनतम तकनीकी से युक्त निर्माणशाला है। इस प्रकार विमान विद्या के विकास की पुरातन, अद्यतन अथवा किसी भी चरमोत्कर्ष में हम विमान विद्या (पक्षी आदि-जिसके गति साम्य से हमने विमान विद्या सीखी) की बराबरी नहीं कर सकते। उसके द्वारा निर्मित छोटे से विमान गृन्ध्र पक्षी को देखें उसका सम्पूर्ण निर्माण माँ के गर्भ के अन्दर ही हाता है, वहीं उसका पंख, सिर (कम्प्यूटर), आँखें (फोटो कैमरा) आदि बनते हैं और सदा एक ही तकनीकी से बनते हैं। जो स्वतः पूर्ण कृति है। मनुष्य के द्वारा करोड़ों रुपये खर्च करके बने विमान (जिनके विभिन्न भाग कई डिवीजनों से बनते हैं तथा तकनीकी भी बदलती रहती है) लाखों वर्षों में भी अपने आप एक विमान नहीं पैदा कर सकते। इसीलिए इतने बड़े **'यद् विमान..... श्रुतिमस्तकगोचरा।।'** अर्थात् 'ओ३म्' मुमुक्षुओं का ब्रह्म विमान' है। हमारी सभी से यही कामना है कि अपने गौरवशाली प्राचीन साहित्य तथा विद्याओं से परिचित हों और उनसे प्रेरणा लेकर देश की उन्नति में प्राण-प्रण से लगें।

हिन्दुस्तान एरेनॉटिक लि.
कोरवा अमेठी

वैदिक गणित के अध्ययन के प्रति पश्चिमी देशों में रुझान

–हरिकृष्ण निगम

हाल ही में विश्व प्रसिद्ध साफ्टवेयर कम्पनी 'इन्फोसिस' के प्रमुख एन.आर. नारायण मूर्ति की पत्नी सुधा मूर्ति ने आंध्र प्रदेश में मंदिरों के नगर बसर में एक विश्व स्तर के वैदिक शोध केन्द्र की स्थापना की घोषणा की है। तीर्थाटन के लिए प्रसिद्ध दक्षिण के इस छोटे से नगर में अध्ययन केन्द्र के साथ-साथ वे एक यज्ञशाला भी बनवा रही हैं जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू ने किया है। इस परियोजना के अंतर्गत प्राचीन वैदिक मूलपाठों के संरक्षण जैसे व्यास वाङ्मय, ब्रह्मसूत्र और अष्टादश पुराणों आदि की आज के जीवन में क्या प्रासंगिकता है, इस पर भी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था होगी। बसर नामक यह स्थान महर्षि वेदव्यास के नाम से जुड़ा है जो अपनी दक्षिणापथ की यात्रा में यहाँ आए थे। इस स्थान को एक समय व्यासपुरी भी कहा जाता था जो गोदावरी के तट पर स्थित है।

इस तरह जब से पिछले एक दशक में पश्चिमी विश्व के गणितज्ञों एवं खगोलशास्त्रियों व अन्य वैज्ञानिकों ने वैदिक विज्ञान की पुनर्वीक्षा कर उसे पूर्ण रूप से तर्क सम्मत घोषित किया है, हमारे देश में इसके अध्ययन के लिए उत्साह की लहर प्रारम्भ हो गई। स्पष्ट है, जैसा हमारे देश के बुद्धिजीवियों के साथ सदैव होता है, जब पश्चिम में हमारे प्राचीन ज्ञान की विधाओं को अनुमोदन मिलता है तभी हमारी आँखें खुलती हैं। वैदिक गणित आज इंग्लैण्ड और अमेरिका के अनेक संस्थानों एवं शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में स्थान पा चुका है पर हमारे अंग्रेजी मीडिया के एक बड़े वर्ग में आज भी इसे सत्तारूढ़ दल के राजनीतिक एजेंडे के हिस्से के रूप में ही देखकर आलोचना की जाती है।

वैदिक गणित पारम्परिक गणित की पढ़ाई से भिन्न है पर बहुआयामी है। मात्र 16 मूल सूत्रों पर आधारित इसके अनेक अंग हैं जिनमें अथाह आधुनिक ज्ञान छिपा है। कदाचित् विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा देश के अनेक स्थानों में इसकी प्राचीन टीकाएँ या व्याख्या ग्रंथ नष्ट हो गये होंगे पर आज भी अनेक विदेशी इन सूत्रों के माध्यम से पुरी के गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ से अनेक अंगों पर चर्चा करने और उनसे मिलने भारत भी आए हैं।

आज स्थिति यह है कि इंग्लैण्ड, अमेरिका, स्विट्जरलैंड के साथ-साथ आस्ट्रेलिया में भी इसकी पढ़ाई की सुविधाएँ उपलब्ध है। आज वैदिक गणित पर अनेक विदेशी विशेषज्ञों के आधिकारिक ग्रंथ भी उपलब्ध है। हाल ही में वेल्स मूल के 46 वर्षीय ब्रिटिश प्रोफेसर जेम्स ग्लोवर मुम्बई आये थे जो गत 25 वर्षों से वैदिक गणित में रुचि ले रहे हैं और सेंट जेम्स इंडिपेंडेंट स्कूल में गणित विभाग के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने वैदिक गणित का विधिवत् अध्ययन किया है और कई पाठ्यक्रम भी प्रकाशित किये हैं। उन्होंने भारतीय गणित शास्त्रियों के देश की अपनी विरासत के प्रति अज्ञान पर चिन्ता व्यक्त की थी। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे अनेक वैदिक सूत्र हैं जिनसे पल भर में बड़ी-बड़ी संख्याओं को जोड़ना या घटाना ही संभव नहीं है बल्कि गणित की जटिल समस्याओं को भी हल किया जा सकता है। यह मात्र मस्तिष्क का जादू नहीं है क्योंकि किसी भी संख्या के दशमलव मूल्यों की गणना भी पलक झपकते वैदिक सूत्रों से संभव की जा सकती है जिसे प्राचीन हिन्दू परम्पराओं ने आविष्कृत किया है। वैदिक गणित का सुव्यवस्थित अध्ययन आज के युग में पहली बार सन् 1911 से 1918 के बीच श्री भारती कृष्णतीर्थ ने किया था। उनका जन्म 1884 में और देहान्त 1960 में हुआ था। उसके वर्षों के शोध के अनुसार 16 सूत्रों पर आधारित प्राचीन गणित से केवल जटिल प्रश्नों के उत्तर ही नहीं दिये जा

सकते हैं बल्कि खगोल शास्त्रीय नक्षत्र गतिविधि व सौरमंडल से संबंधित गुत्थियाँ भी वैज्ञानिक रूप से सुलझाई जा सकती हैं। जब पश्चिमी देश पथविहीन गुमनामी में खोए थे, हजारों वर्ष पहले केवल वैदिक ज्ञान ही दशकों आगे सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण के तिथि वार व समय को सही-सही घोषित कर सकता था। पृथ्वी की गति या वर्ष के हर दिन व पल की गणना, जो आज भी वैज्ञानिक मानदंडों पर सही उतरती है, सिर्फ प्राचीन भारत के ज्ञान की विरासत है। श्री भारती कृष्ण तीर्थ ने अपने सूत्रों की व्याख्या में खगोल शास्त्री आर्यभट्ट (476-555ई.) की प्रतिभा की सहायता ली, जिनका योगदान समय का काल मानदंड के स्थापित करने के साथ-साथ नक्षत्रों की गति ग्रहणों के समय निर्धारित करने में अनूठा था।

श्री भारती कृष्ण तीर्थ का बचपन का नाम वेंकटरमण था और बिना औपचारिक शिक्षा के वह संस्कृत और गणित के अद्वितीय अध्येता के रूप में उभरे थे। 1925 में पूरी के गोवर्धन मठ के शंकराचार्य बने। उनके **'वैदिक गणित ग्रंथ'** में सहज रूप से गुणा, भाग, वर्गमूल व घनमूल निकालने के सूत्र दिये गये हैं तथा **'सिद्धांत स्कंध'** में बीजगणित एवं त्रिकोणमिति की समस्याओं के हल हैं। दशमलव प्रणाली को वैदिक सूत्रों ने पूरी तरह से आत्मसात् किया था। उन्होंने दूसरे महान् गणितज्ञ भास्कराचार्य के 'लीलावती' ग्रंथ से गणित संबंधी अनेक जटिल प्रश्नोत्तरों का भी छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा हल प्रस्तुत किया।

वैदिक प्रणाली का एक मूल तत्व संबंद्धता या 'कोहेरेन्स' है, जिसमें किसी भी छोटी अथवा बड़ी संख्या का गुणा करने की असीमित क्षमता है या वर्गमूल निकालने के जो तरीके हैं, वे बड़ी सहजता से सीखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए एक सूत्र ऊपर से नीचे दिये अंकों अथवा समानान्तर अंक क्रमों के अनेक जटिल प्रश्नों का हल पलक झपकते दे सकता है। इस सूत्र में उस मानसिक गणना की प्रक्रिया है जो पूर्णतः स्वाभाविक

है और विद्यार्थियों के लिए एक समनुकूल व वैज्ञानिक प्रणाली प्रस्तुत करती है। यह विधि नवीन भी है और खेल-खेल में गणित भी सिखाती है। गणित की इस प्रकृति को 'एकीकृत ढाँचें वाला गणित' कहा जाता है। आज पश्चिमी गणितज्ञ इस बात पर चकित है कि वैदिक गणित की सहजता संगणकों के अनुकूल तो है ही, साथ ही साथ जहाँ गणना मानसिक रूप से की जाती है, वह प्रक्रिया लिखित रूप से भी संभव है।

आज भारत से अधिक पश्चिम के विश्वविद्यालय वैदिक गणित को सुव्यवस्थित रूप से पढ़ा रहे हैं। पहले यूरोपीय विद्वानों ने भी वैदिक गणित का मखौल उड़ाया था। पहले श्री भारती कृष्ण तीर्थ ने वैदिक प्रणाली की 16 पुस्तकों का प्रणयन किया था, पर जब 1965 में उनका बृहद् ग्रंथ **'वैदिक मैथमैटिक्स'** प्रकाशित हुआ जो उन्होंने अपनी मृत्यु से पाँच वर्ष पहले लिखा था, तब इंग्लैण्ड के केनेथ विलियम्स, एन्ड्रयू निकल्स और जेरेमी पिकल्स जैसे गणितज्ञ उससे चमत्कृत हो उठे थे। उन्होंने इस विधा में रुचि ली और लंदन में श्री भारती कृष्ण तीर्थ की टिप्पणियाँ की विवेचना करते हुए भाषण दिये। लंदन में **'इन्ट्रोड्यूसिंग लेक्चर्स ऑन वैदिक मैथमेटिक्स'** जब 1981 में प्रकाशित हुआ, तब काफी हलचल मच गई थी। 1981 और 1987 के बीच एन्ड्रयू निकल्स ने भारत की चार यात्राएँ कीं और अनेक भारतीयों से मिले। इसके बाद लंदन के सेंट जेम्स स्कूल व क्वीन्सगेट स्कूल में इस विषय को पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया। आज यह विषय भारत से अधिक विदेशों में पढ़ाया जा रहा है।

श्री भारती कृष्ण तीर्थ के जन्म शताब्दी वर्ष 1984 में तीन और ग्रंथ प्रकाशित हुए जिनके प्रकाशक थे **'द वैदिक मैथमैटिक्स रिसर्च ग्रुप'**। महर्षि महेश योगी के दुनिया भर में फैले शिक्षण संस्थानों में भी आज यह विषय पढ़ाया जा रहा है। लंकाशायर में 1998 से **'कॉस्मिक कान्सेप्ट'** के नाम से इसे विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। आज अमेरिका के उत्तरी

केरोलाइना, आयोबा और सिडनी में यह व्यापक रूप से अध्ययन का विषय बन चुका है। वैदिक गणित की एक विश्व अकादमी की स्थापना भी हो चुकी है। के. आर. विलियम्स नामक गणितज्ञ ने अपने **'द नेचुरल कैलकुलेटर'** नामक ग्रंथ में तो यहाँ तक कहा है कि वैदिक गणित के सिद्धांतों से हर विद्यार्थी सहज रूप से बिजली की गति जानने वाला केलकुलेटर बन सकता है, यदि वह इसके सिद्धांतों को समझ लें।

जब जेम्स ग्लोवर अपने भारत के दौरे पर थे, तक एक साक्षात्कार में कुछ भारतीय पत्रकारों ने उनकी आलोचना करते हुए कहा था कि क्या वैदिक गणित को बढ़ावा देकर वे अपने भूतकाल का गुणगान करने वाले पुरातनपंथी व पुनर्त्थानवादी हिन्दुओं के हाथ में एक हथियार सौंप रहे हैं? तब दुःख एवं आक्रोश मिश्रित स्वर में उन्होंने उत्तर दिया था कि वे राजनीतिज्ञ नहीं है पर यह स्पष्ट रूप से समझते हैं कि वैदिक गणित पूर्णतः वैज्ञानिक है और हिन्दुओं को उस पर अभिमान करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था अरबी अंक या **'अरेबिक न्यूमैरल'** शब्द भी, जो आज प्रचलित है, वह दिग्भ्रमित करने वाला है। अर्नाल्ड टायनबी व बर्ट्रेन्ड रसल जैसे महान् विचारकों तक ने उन्हें **'हिन्दू न्यूमेरेल'** के रूप में ही मानने की अनुशंसा की थी।

हमारे कथित प्रबुद्ध मीडिया को हिन्दू विरोधी दुराग्रहों का इससे अधिक शर्मनाक उदाहरण और क्या हो सकता है?

'राँची एक्सप्रेस'

दैनिक पत्र से साभार

शहीद-ए-आज़म
(शहीदी दिवस पर विशेष)

-विवेक शुक्ला

भारत माँ के लिए जान कुर्बान करनेवाले भगतसिंह को शहीद का दर्जा मिला या नहीं, यह इन दिनों बहस का मुद्दा बन गया है। हालाँकि इस मसले पर बहस बेकार है क्योंकि भगतसिंह की कुर्बानी किसी भी बहस से परे है।

अरविंद केजरीवाल और एक टीवी एंकर के बीच संवाद। गंभीर सवालों के सारगर्भित जवाब आ रहे हैं। ब्रेक होता है। संवाद भगतसिंह पर शुरू हो जाता है। जिधर केजरीवाल बैठकर इंटरव्यू दे रहे हैं, वहाँ पर भगतसिंह का चित्र रखा है। शायद इसीलिए एंकर भगतसिंह का जिक्र करता है। केजरीवाल कहते हैं, यह अफसोस की बात है कि सरकार अब तक भगतसिंह को शहीद का दर्जा नहीं दिलवा पाई। फिर वह एंकर से आग्रह करते हैं कि भगतसिंह से जुड़े संवाद को एडिट करें। जाहिर है, वे भगतसिंह के नाम का श्रेय लेने की ख्वाहिश रखते हैं।

बहरहाल, भगतसिंह को शहीद का दर्जा दिलवाने की होड़-सी मची हुई है। पिछले साल भगतसिंह के एक संबंधी यादवेंद्र सिंह ने आरटीआई के जरिए गृह मंत्रालय से जानकारी चाही थी कि भगतसिंह को शहीद का दर्जा मिला हुआ है या नहीं। गुस्ताखी माफ, उस आरटीआई के जवाब में उतना ही अधकचरा जवाब आया, 'सरकार के पास इस तरह का कोई रिकॉर्ड नहीं है जिससे साबित हो कि भगतसिंह को शहीद का दर्जा मिला है या नहीं। अब बड़ा सवाल- क्या भगतसिंह जैसी शख्सियत को जिनसे पीढ़ियाँ प्रभावित और प्रेरित होती रही हैं, शहीद या शहीद-ए-आज़म का दर्जा कोई सरकार देगी या दे सकती है? क्या केजरीवाल उन्हें शहीद का दर्जा दिलवाएँगे? जेएनयू में प्रोफेसर रहे चमन लाल ने भगतसिंह पर लिखी अपनी किताब का शीर्षक 'भगतसिंह' ही रखा। उन्होंने शहीद या शहीद-ए-आज़म का जिक्र नहीं किया। **वह कहते है कि शहीद तो भगतसिंह के**

अलावा राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर, खुदीराम बोस समेत सैंकड़ों हुए। इन सभी को लोग खुद शहीद पुकारने लगे। तो भगतसिंह शहीद-ए-आज़म कैसे बन गए?

चमनलाल कहते हैं कि भगतसिंह संभवतः देश के पहले चिंतक क्रांतिकारी थे। वह राजनीतिक विचारक थे। लगातार लिख-पढ़ रहे थे। उनसे पहले या बाद में कोई उनके कद का चिंतनशील क्रांतिकारी सामने नहीं आया। भगतसिंह को फाँसी की सजा मिलने के बाद कानपुर से निकलने वाले 'प्रताप' और इलाहाबाद से छपने वाले 'भविष्य' जैसे अखबारों ने उनके नाम से पहले शहीद-ए-आज़म लिखना शुरू कर दिया था। यानी कि जनमानस ने उन्हें अपने स्तर पर ही शहीदे-ए-आज़म कहना शुरू कर दिया था। जब अवाम भगतसिंह को शहीद-ए-आज़म कहने लगे तो सरकार कहाँ से आती है। पूर्व प्रधान आई. के. गुजराल ने भगतसिंह की ठंडी पड़ती चिता को देखा था। उन्होंने एक बार इस लेखक को बताया था कि भगतसिंह अपने जीवन काल में ही लेजेंड बन गए थे। उनकी फाँसी की खबर जैसे ही देश को मालूम चली, बस देश गुस्से में उबलने लगा। अंग्रेजों के खिलाफ जगह-जगह प्रदर्शन होने लगे। भगतसिंह जैसे राष्ट्रभक्त सदियों में एक बार जन्म लेते हैं। वह किसी उपाधि या पुरस्कार के मोहताज नहीं थे। बहरहाल, भगतसिंह को शहीद हुए एक अरसा गुजर चुका है। उसके बाद भी वह देश के नौजवानों को प्रेरित करते हैं। बीते साल एक प्रमुख पत्रिका ने एक पोल किया था। सवाल पूछा गया था कि जनता सबसे अधिक किस स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी शख्सियत से प्रभावित है।

पोल में भगतसिंह सब पर भारी पड़े थे। भगतसिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर लिखी बहुचर्चित पुस्तक 'दिमार्टर' के लेखक कुलदीप नैयर कुछ तंज करते हुए कहते हैं कि गाँधी जी भी शहीद हुए। पर उन्हें कोई शहीद-ए-आज़म नहीं कहता। इससे उनका कद छोटा नहीं हो जाता। गाँधीजी, नेताजी, भगतसिंह जैसी शख्सियतों को किसी सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है।

मेरे पिता जी (एक मार्मिक संस्मरण)

-इन्द्र *विद्यावाचस्पति*

पिताजी का मन कुछ ऐसे ढंग का बना था जिसे समझदार लोग, सांसारिक दूरदर्शिता या दुनियादारी के नाम से पुकारते हैं, वह कभी भी, उनके पास फटकती नहीं थी। जब कोई बड़ा कदम उठाते थे, तो आप ने कोई निश्चय नहीं किया था तो उत्तर देते वह मेरी निर्बलता थी। आज प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में मेरी अन्तरात्मा ने निश्चय रूप से कह दिया, मुझे यह काम करना चाहिए। फिर प्रश्न उठता यह होगा कैसे? उत्तर मिलता अब तक जिस प्रकार सब कार्य सहस्त्रबाहु के भरोसे हुए हैं, उसी प्रकार, फिर तीन चार घंटो में वह नया कदम बहुत दूर तक उठ चुका होता था। दृष्टान्त के लिए कॉंग्रेस की कार्यकारिणी या हिन्दू महासभा अथवा शुद्धि सभा से त्यागपत्र देने जैसे महान प्रश्न प्रातः काल सूर्य निकलने से पहले लिखा हुआ विस्तृत त्यागपत्र, ऑफिस कॉपी, स्पष्टीकरण का तार सब कुछ मेज पर मिलता। सेवक द्वारा चिट्ठी डाक के डिब्बे में पहुँच जाती। तार-तारघर पहुँच जाता। उस सम्बन्ध में जितनी फाइलें होती, सभी अल्मारी में बन्द करने को, पंडित धर्मपाल विद्यालंकार के सुपुर्द हो जातीं।

इन मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के साथ भगवान की दी हुई शारीरिक विशेषताएँ भी थीं। हमारे दादाजी सिपाही थे। उनका पूरा ठाठ सिपाहीयाना था। वे पिताजी से दो अंगुल ऊँचे थे। फैलाव में विशालकाय थे, पिताजी ने शारीरिक सम्पत्ति विरासत में पाई थी। जब वे भीड़ में चलते तो सबसे ऊँचे दिखाई पड़ते। संकट काल में जनता एक दम मार्गदर्शन चाहती है, उसका खून इतना उबल चुका होता है कि न परामर्श की गुंजाइश होती है, न शाब्दिक आश्वासन की। उस समय पिताजी क्षणभर में इतिकर्त्तव्यता का निश्चय कर लेते थे।

एक मार्मिक प्रसंग का वर्णन यह है। जब हम दोनों भाई बंगले पर पहुँचे, तो पिताजी को बड़े कमरे में टहलते पाया, यह उनकी विचार की मुद्रा थी। गंभीर विचार के समय वे पीछे की ओर दोनों हाथ मिलाकर टहला करते थे। हमारे पहुँचने

पर कुर्सी पर बैठ गए और अत्यन्त गम्भीरता से दराज में से फुलस्केप आकार का लिखा हुआ कागज निकालकर, हमारे सामने रखते हुए कहा- इसे पढ़ लो, यदि तुम इससे सहमत हो तो इस पर हस्ताक्षर कर दो। उस कागज में लिखा था- मैंने अपनी शक्ति के अनुसार अपने जीवन में वैदिकधर्म की सेवा की है। ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य कर वैदिकधर्म के पुनरुद्धार और आर्य जाति के उत्थान के लिए गुरुकुल के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी है, परन्तु अब मुझे अनुभव हो रहा है कि जालन्धर में मेरा जो मकान है, वह पुश्तैनी नहीं हैं, मैंने अपनी कमाई से बनाया है, उसमें अभी तक मेरी ममता विद्यमान है। मैं उसे भी मिटा देना चाहता हूँ। इस कारण मैं इस दान पत्र द्वारा वह मकान गुरुकुल कांगड़ी हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित करता हूँ। जब वे दानपत्र पढ़ चुके तो बोले-"यदि तुमको इसमें कोई आपत्ति न हो, तो वैसा लिखकर दोनों भाई नीचे अपने हस्ताक्षर कर दो ताकि सभा वाले झगड़ा न मचाएँ। बीस हजार की कोठी थी, उसको बेचकर दस हजार से हरिश्चन्द्र का प्रेस चलाने का आदेश तथा मुझे विलायत जाकर, दस हजार से वैरिस्टरी पास करने का आदेश था। इस नए दान-पत्र से वह वसीयतनामा रद्द होता था। हमने चुपचाप उस अर्पणनामे पर स्वीकृत सूचक हस्ताक्षर कर दिए। उन दिनों गुरुकुल का उत्सव चल रहा था। आगरे के ठाकुर नत्थासिंह ने "मथुरा में एक बत्ती धीमी सी जल ही थी" भजन गया। तत्पश्चात पिताजी ने खड़े होकर कहा-मैं गुरुकुल हेतु धन संग्रह करने दिल्ली गया। शहर के सबसे बड़े रईस के घर चन्दा माँगने पहुँचा। जब उसे मेरा पतला चला, वह घर के अन्दर चला गया और कहला भेजा कि रायसाहब कहीं गए हैं। बहुत देर तक रायसाहब बाहर न आए मैं चला आया। अन्तरात्मा में पूछा-ऐसा क्यों हुआ? क्या कमी है-मुझमें। क्या मैंने अपने आपको सर्वतोभाव से धर्म अर्पण नहीं किया। फिर पिताजी ने अर्पणनामा पढ़कर सुनाया। सब समूह रो रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण जी रो रहे थे। महाशय कृष्ण रो रहे थे।

How To Be Vishwa Guru

-Bhanu Dhamija

Making Bharat a Vishwa Guru-a reformer and teacher to the entire world - is a grand endeavour. The BJP-RSS combine adopted this courageous mission more than a decade ago. But the chances are they will fail. Their quest is rooted in India's past, not her present, and it lacks a practical approach. Instead of utilising the tremendous strengths offered by the country's glorious past, their tactics are squandering them: This is not helping the world solve its problems of the day.

Being a Vishwa Guru would make all Indians proud. We all yearn for the glory of those days when our people reached the pinnacle of thought, achieved great understanding of the divine, and invented excellent ways of living.

However, India cannot simply reclaim such a position: it must be earned afresh. Our people will have to do the necessary tapasya once again, with new thinking for modern times. We can be guru only if the global community acknowledges us as such; we cannot thrust our gurudom upon them.

What it takes to be a guru was described by Swami Vivekananda, the man who gave India this aspiration. In his 1901 essay "My Master" he wrote: "If you wish to be a true reformer, three things are necessary. The first is to feel.

Do you really feel for your brothers?

Are you full of that idea of sympathy?

You must think next if you have found any remedy. The old ideas may be all superstition, but in and around these masses of superstition are nuggets of gold and truth. Have you discovered means by which to keep that gold alone, without any of the dross? If you have done that......one more thing is necessary. What is your motive? Are you sure that you are not actuated by greed of gold, by thirst for fame or power? Then you are a real reformer, you are a teacher, a Master, a blessing to mankind."

India's claim to world guru status is based upon old thinking: Vasudhaiva Kutumbakam. the world is one family. We argue that since we were the first to say so, and the only people who follow the precepts, we are uniquely qualified to be the world's guru. It may well be true, but nobody is buying it. All religions claim moral superiority. And the way BJP and RSS are making the case, we look like all other religions. Consider RSS chief Mohan Bhagwat's recent appeal: "Let the entire world regain its lost balance on the basis of Vasundhaiva Kutumbakam and walk in the path of righteousness," led by "a Bharat that is capable of restoring the world's balance of Dharma."

Today if India wishes to be viewed as an exceptional country, it must offer new solutions to modern-day problems. The problems of diversity, religious extremism, inequality and authoritarianism are desperately seeking new answers.

Indologists would of course argue that their solution is hidden in the Vedas and Mahabharat. Christians and Muslims say the same about their holy books.

This is not to say India doesn't have unique strengths. Infact it has the rare combination of a universal philosophy. inherently tolerant religion, good size country, young population, democracy, and diversity that no other nation can match. The key is to put these strengths to good use instead of squandering them. Here are some suggestions:

First, India must invent a new system of government that shows the world a way forward in dealing with diverse populations. This can be done by providing a combination of local autonomy and national superemacy. It can be a model for other countries to manage their 'unity-in-diversity'. Instead, India has been busy denying local controls and forcing strong central governments.

Second, India can become a global role model in controlling religious fanaticism. Religious minorities cannot be wished away or governed by force forever, India must find a way to give her minorities a true partners in rebuilding our nation.

Those who think, that Hindu unity and hegemony are essential for the short term do not realise the long term harm being done to Hinduism's prestige worldwide and practice at home. A religion of inquiry is being turned into a religion of fanaticism.

Third, India can also find a balance of capitalism and socialism that the world could follow. It can do so by limiting the role of government while keeping the best practices of a welfare state. Instead, in its search for power, parties are adopting the old ways of vote-grabbing socialism.

Fourth, people across the globe are suffering under autocratic governments, India can show a way forward. It has one of the world's most entreched democracies, but our people's participation is limited to voting. India can build a strong model of participatory democracy by decentralising its institutions. Instead, it is doubling down on the Nehruvian model of centralisation of power.

Of course, these problems are immense. Becoming a Vishwa Guru after all,is no easy feat.

Divya Himachal Prakashan

Date of Pubn. : 30.4.2018 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 May 2018
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

न वाऽउऽएतान्म्रियसे न रिष्यसि देवाँऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः।
हरी ते युञ्जा पृषतीऽअभूतामुपास्थाद् वाजी धुरि रासभस्य।।
।।यजु.25/44।।

ऋषिः गोतमः, देवता–आत्मा, छन्दः–स्वराट् पंक्तिः

दिव्य ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य को यह समझ आ जाती है, कि शरीर के भरने पर आत्मा नहीं मरती, आत्मा अमर है। एक मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करके मोक्ष के पथ पर अग्रसर होना चाहिए। इससे उसका जीवन आनंदमय हो जाएगा।

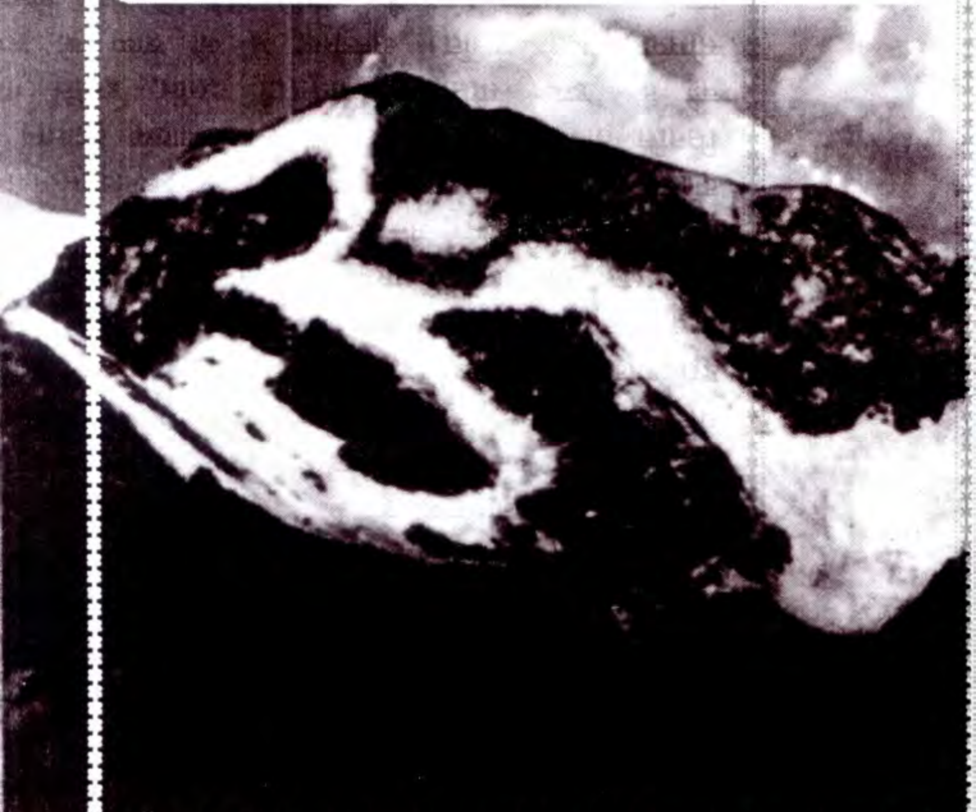

With the divine knowledge, a person understands that the body is dying, not the soul, the soul is immortal. A person has to control his Indriyas and move on the path of Moksha. He will attain joy of life.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58